॥ श्री अर्गलास्तोत्र ॥

(स्वामी रुपेश्वरानंद आश्रम द्वारा संशोधित)

श्रीअर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुर्ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीमहालक्ष्मीर्देवता मम संकल्पित मनोवांछित कार्य सिध्दयर्थे श्री भगवती महालक्ष्मी प्रीतये च पाठे विनियोगः॥

॥अथ स्तोत्रम्॥

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते॥
जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते॥
मधुकैटभविद्राविविधातृवरदे नमः।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥
महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥
रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनि।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥
शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥
वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥

अचिन्त्यरुपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥
नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥
स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥
चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥
देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥
विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥
विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम्।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥
सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥
विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥
प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥
चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि।

स्वामी रुपेश्वरानंद आश्रम

रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥

कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके।

रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥

हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि।

रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥

इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि।

रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥

देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनि।

रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥

देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके।

रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ।

तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम् ॥

(यह श्लोक अविवाहित पुरुष/ युवक पढ़े, विवाहित स्त्री / पुरुष न पढ़ें)

मनोहरम् पतिम् देहि, मनोवृत्तानुसारिणम् ।

तारकम् दुर्ग संसार सागरस्य कुलोद् भवाम् ॥

(यह श्लोक अविवाहित स्त्री / कन्या पढ़ें, विवाहित स्त्री / पुरुष न पढ़ें)

सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरी।

एवमेव त्वया कार्यस्मद्वैरि विनाशनम्॥

(यह श्लोक विवाहित स्त्री / पुरुष पढ़ें !)

स्वामी रुपेश्वरानंद आश्रम

सिद्धि विधान एवं फलश्रुति:

- शीघ्र विवाह के लिए यह स्तोत्र लाभकारी है।
- यह स्तोत्र भौतिक मनोकामना (राजसिक वैभव- रूप, यश, जय, शत्रु नाश) आदि की पूर्णता के लिए पढ़ा जाता है।
- यह स्तोत्र 1000 पाठ से सिद्ध होता है। विशेष मनोकामना के लिए 10000 पाठ करें।

मुख्य विषय:

- विवाह की इच्छुक स्त्री/कन्या इसका पाठ करे तो " **मनोहरम् पतिम्....** " वाले श्लोक का प्रयोग करें !
- विवाह की इच्छुक पुरुष /युवक इसका पाठ करे तो " **पत्नीं मनोरमां....** " वाले श्लोक का प्रयोग करें !
- यदि वैवाहिक जीवन में समस्या है तो पुरुष अथवा स्त्री " **सर्वाबाधा प्रशमनं.....** " वाले श्लोक का प्रयोग करें !
- यदि साधक संन्यासी है या अखंड ब्रह्मचारी है तो निम्न परिवर्तन करे: "रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि" के स्थान पर "**ज्ञानं देहि भक्तिं देहि यशो देहि द्विषो जहि**" का प्रयोग करे और अंत में **सर्वाबाधा प्रशमनं.....** " वाले श्लोक का प्रयोग करें !

- स्वामी रुपेश्वरानंद आश्रम बलुआ, उत्तर प्रदेश: 232109
Mob: +91- 7607233230 , 98177 77 108
वेबसाइट लिंक: https://swamirupeshwaranand.in/
चैनल लिंक: https://www.youtube.com/c/SwamiRupeshwaranand/